1978555

No. of Printed Pages : 19

MTT-002

POST-GRADUATE CERTIFICATE IN BANGLA-HINDI TRANSLATION PROGRAMME (PGCBHT)

Term-End Examination

June, 2019

बांग्ला–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन

(MTT–002)

Time : 3 Hours *Maximum Marks : 100*

***Note** : Attempt all questions.*

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग 300 शब्दों में दीजिए : 2x10=20

   (a) मुहावरों और लोकोक्तियों में अंतर बताते हुए उनके अनुवाद में आने वाली कठिनाइयों की सोदाहरण चर्चा कीजिए।

(b) शब्द और पदबंध का अंतर स्पष्ट करते हुए सोदाहरण बताइए कि पदबंध कितने प्रकार के होते हैं।

(c) बांग्ला की 'साधु' एवं 'चलित' रूप संबंधी विशेषताओं पर उदाहरण सहित प्रकाश डालिए।

(d) हिंदी और बांग्ला की साहित्यिक–सांस्कृतिक परंपरा पर एक निबंध लिखिए।

2. निम्नलिखित बांग्ला पदों/शब्दों के हिन्दी पर्याय लिखिए : 5

বর্জ্য পদার্থ / বাতাসের শক্তি / প্রতিনিয়ত / যথাযথভাবে / মেটানোর

আলোচনা / বিয়ে / হলুদ / হারানো / জামাকাপড়

3. निम्नलिखित हिंदी शब्दों के बांग्ला पर्याय लिखिए: 5

सामान / शायद / फटाफट / थोड़ा / बल्कि / प्रातःकाल / इसके अलावा / आपसी संपर्क / चाची / शिकायत

4. निम्नलिखित हिंदी मुहावरों/ लोकोक्तियों में से किन्हीं **पाँच** के बांग्ला समतुल्य बताते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 15

(a) अधजल गगरी छलकत जाए
(b) सात खून माफ़ होना
(c) खून–पसीना एक करना
(d) बिजली टूट पड़ना
(e) ठंडा पड़ना
(f) छोटे मुँह बड़ी बात
(g) आँखों का तारा
(h) रास्ते का काँटा
(i) जान हथेली पर लिए रहना

5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 3x15=45

(a) শুধু পাঁচিল দেওয়া নর্মদা উদগামের মন্দিরের ভেতরেই ঢুকেছিলো ওরা। অন্য কোনো মন্দিরের ভেতরে ঢোকেনি। তবে কপিলধারা ও কপিলাশ্রমে নামতে উঠতে অনেকগুলো সিঁড়ি

ভাঙতে হয়েছিল। চারদিকে শুধু গভীর জঙ্গল আর পাহাড়। বিন্ধ্য রেঞ্জ।

অরা ভাবছিল ছেলেবেলাতে বেনারসের কাছের বিন্ধ্যাচলে গিয়ে ভেবেছিল, ওটাই বুঝি বিন্ধ্যরেঞ্জ। বিন্ধ্যাবাসিনী মন্দির আছে বলে ঐ নাম হয়ত। কে জানে। মধ্যপ্রদেশের এই বিন্ধ্যরেঞ্জই হয়াতা উত্তরপ্রদেশ অবধি চলে গেছে। ভারতের রিলিফ ম্যাপ দেখলে বোঝা যাবে। সবজান্তা পরদেশীয়া মিত্রও জানতে পারে। কিন্তু জিজ্ঞেস করতে লজ্জা করল। ওকে বোকা বলে থ্যাপাবে। যে মানুষগুলো ওকে বোকা বানাবার মত বেশী জানে তাদের মোটেই পছন্দ করে না অরা।

নর্মদাদেবীর মূর্তিটা কালো কষ্টিপাথরের। এক হাতে তার বরাভয়,

অন্য হাতে কমুণ্ডলু। বড়দি দেখিয়ে দিলেন। অন্যদিকে দেবতা নর্মদেশ্বর মহাদেব। মহাদেবের পায়ের থেকে জন্ম নর্মদার, তাই মহাদেবের আরেক নাম নর্মদেশ্বর। শংকর ও নর্মদার যুগল মূর্তিও রয়েছে। তাছাড়া রয়েছে পার্বতী, বালাসুন্দরী, শ্রীদুর্গা, রোহিণী, গোরক্ষনাথ, কার্তিক, মনসা ইত্যাদি নিজের নিজের মন্দিরে। বত্রিশ কোটি দেবতার মধ্যে সামান্য কজনই আছেন এখানে।

বড়দি বললেন, প্রতিবছর শিবরাত্রি আর নাগপঞ্চমীর দিনে বিরাট বসে এখানে। কত তীর্থযাত্রীই না তখন আসেন।

নাগপঞ্চমীটা কোন সময়ে?

এই তো। বেশি দেরী নেই। বসন্তপঞ্চমী তো এসেই গেল। এর কিছুদিন পরই।

নর্মদা, জানিস তো পশ্চিমবাহিনী। কাশীর কাছের গঙ্গা যেমন উত্তরবাহিনী।

তাই ? অরা বলল।

(b) অবিনাশ এবারেও প্রতিবাদের চেষ্টা করলেন। বললেন, "কেবল কথাসাহিত্যিকের ওপর আপনারা অযথা দায়দায়িত্বের বোঝা চাপিয়ে দেওয়ার চেষ্টা করেন কেন? কই, বিলায়েত খান, বিসমিল্লা খান, শিবকুমার চৌরাশিয়াকে কেউ তো জিজ্ঞেস করে না, তাঁদের সৃষ্টি করা সুরমাধুরী থেকে সমাজের কি উপকার হালা? শিল্প, সাহিত্য, সঙ্গীত তার শাস্ত্রীয় ধারায় নিজের খেয়ালে প্রবাহিত হবে অনাদিকালের আনন্দলোকের দিকে, তারসঙ্গে ক্ষণকালের ন্যায়-অন্যায় হিতাহিতের সম্পর্ক থাকবে কেন?"

অভিযোক্তা অবিনাশ হঠাৎ স্তব্ধ হয়ে গিয়েছেন। কাঠগড়ায় আসামী অবিনাশকে আর নিগৃহীত করার অভিলাষ নেই। কিন্তু আসামী অবিনাশ যেন ভিতর থেকে প্রবল স্রোতে ভেসে চললেন।

মন বলতে চাইছে, যাদের জন্যে লিখি, যারা আমার লেখাকে মূল্য দেয়, তাদের চলছে দুঃসময়। দুর্ভাগ্যের ঢেউ একের পর এক জনজীবনের ওপর আছড়ে পড়ে, বিপর্যস্ত হতে চলেছে বাঙালী জাত।

"ধর্মাবতার কে বলে লেখকের কোনো ভূমিকা নেই?কে বলে বঙ্কিম বেঁচে থাকলে নির্লজ্জের মতন বলতেন, আমার কোনো দায় নেই।"

বুকের মধ্যে এক নতুন ধরনের আবেগ অনুভব করছেন অবিনাশ ব্যানার্জী। এই জাত এবং এই মানুষের দুঃখ অপনোদনের জন্যে এতদিন তো কিছুই করা হয়নি। অতীতের সাহিত্যযাত্রীদের কীর্তিকথা স্মরণ করলেই তো অবিনাশ এবং আরও অনেকেই বলতে পারতেন, উত্তিষ্ঠিতঃ জাগ্রতঃ. ওঠো, জাগো

(c) কুন্তী তো ভোজরাজের কন্যা। পালিত, কিন্তু তথ্য ও বর্জনা অনুসারে রাজার অত্যন্ত প্রিয় পাত্রী। দুর্বাসাকে দেখাশুনো করার পক্ষে শ্রেষ্ঠও বটে। চোখের সামনে দুইটি সম্ভাব্য ব্যাখ্যা আছে। এক, প্রোটোকল এবং তার সঙ্গে অঙ্গাঙ্গী হয়ে দুর্বাসামুনির বহুশ্রুত কপাল কুঁচকানো ফণা তোলা স্বভাব। দুই, ভোজরাজের চেতন অবচেতন

কোনো বাসনা। ঋষি কুলে দুর্বাসার যে স্থান সেই স্থানের যোগ্য সেবিকা নিয়োগ করাটা বিধি। এটাই প্রটোকল। তাই নিজের কন্যাকে, শ্রেষ্ঠা-সেবিকাকে নিয়োগ করা ধরে নেওয়া যায়। আর দ্বিতীয় সম্ভাবনা একেবারেই কি নাকচ করা যায়? পাত্র হিসেবে একটু খাম্মাত চরিত্রের বটে, কিন্তু ব্রাহ্মন কুলে, ঋষিদের মধ্যে, জামাই হিসেবে তো সেই ঋষি কোনোমতেই খাটো নয়। ঋষি সন্তুষ্ট হয়ে যদি পানিপ্রার্থনা করেন, তাহলে সেই মহাভারতীয় ব্রাহ্মন্য প্রাধান্যের যুগে, সে বড়ো ছোটপ্রাপ্তি বলে মান্য হবার মতো ব্যাপার ছিল না।

তা ছাড়াও আছে। যে পরিমান ভীত ছিলেন ভোজরাজ এবং তা জানাও ছিল

কুন্তীর, তাতে করে ঋষির কাছে (অথবা সূর্যের কাছে) একটা বর চেয়ে নিলেই তো মিটে যেত পুত্রের সামাজিক স্বীকৃতির বর। বাবাকে বলে দিলেই মিটে যেত। কন্যাবস্থা ফিরে পেলেন কুন্তী, জৈব ব্যবস্থায় যা অসম্ভব, অথচ পুত্রের স্বীকৃতি আদায় করে নিলেন না। এটা একটা তাজ্জব ব্যাপার। অথচ সত্যবতীর বেলায় তাইই হল। সত্যবতী বর চেয়ে নেননি ঠিকই, কিন্তু অস্বীকারের অন্যায়েও ঠেলে দেননি ব্যাসদেবকে, সেকথা বারবারই উঠেছে এবং মান্যতা পেয়েছে। তিনি শান্তনুকে বিয়ে করেছিলেন এবং দুইটি পুত্রের জন্মও দিয়েছিলেন। কুন্তীও পরে পাণ্ডকে বিয়ে করলেন কিন্তু পাণ্ডর ঔরস কোনো পুত্রের জন্ম দিতে

পারলেন না। সে কথায় পরে আসা যাবে।

(d) সকাল আটটা প্রায়।

ক্ষিতীশ বাজার করে ফিরেছে। জুপিটারে আর সে যায় না। সকাল-বিকাল এখন তার কোনো কাজ নেই। অবশ্য বাজার করাটা তার নিত্যদিনের কাজগুলির মধ্যে অন্যতম। সে বাজারে যায় বাড়ির কাছের বস্তির সরু গলি দিয়ে, ফেরে সেন্ট্রাল এভেন্যুইতে চিলড্রেন্স পার্কটাকে ঘুরে জন্য পথ ধরে।

আজ ফেরার পথে দেখল পার্কে খুব ভীড়। বিশ্রাম চালাটায় টেবিল চেয়ার পাতা। লাউড্স্পীকার এ হিন্দী ফিল্মের গান বাজছে। হঠাৎ বন্ধ করে ঘোষণা

হল – "নেতাজী বালক সঙ্ঘের উদ্যোগে কুড়ি ঘন্টা অবিরাম ভ্রমন প্রতিযোগিতা। প্রতিযোগিতা শুরু হয়েছে কাল রাত আটটায়। শেষ হবে আজ বিকেল চারিটায়।"

এরপর অন্য এক কণ্ঠে শোনা গেল : "প্রতিযোগিতা শুরু হইয়াছে কাল রাত্রি আট ঘটিকায়, উদ্বোধন করেন অতীতদিনের খ্যাতকীর্তি ফুটবল খেলোয়াড় শ্রীকৃষ্ণপ্রসাদ মাইতি। প্রতিযোগিতা সমাপ্ত হইবে অদ্য বৈকাল চারি ঘটিকায়। পুরস্কার বিতরণ করিবেন শ্রদ্ধেয় জননেতা ও আমাদের সংঘের প্রধান পিষ্টপোষক শ্রীবিষ্টুচরণ ধর মহাশয়। প্রতিযোগিতায় নেমেছিল বাইশজন প্রতিযোগী, আটজন অবসর নিয়েছে ইতিমধ্যে।"

ক্ষিতীশের চোখ হঠাৎ আটকে গেছে নিকষকালো একটি চেহারাতে।

(e) চিঠিখানা পেলেন সোমেশ্বর অফিসের টেবিলে। দিবাকর রেখে গেছে আরো কিছু কাগজপত্রের সঙ্গে।

অফিসের ঠিকানায় ইনল্যান্ড লেটার? কে দিলো? হালকা নীলচে রঙা চিঠিটা হাত বাড়িয়ে তুলে নিয়েই যেন সাপের ছোবল খেলেন সোমেশ্বর।

এ কী ? ঠিকানায় কার হাতের লেখা?

ভয়ঙ্কর পরিচিত এই লেখাটা যেন ছোবলটা বসিয়েই অবশ করে দিল সোমেশ্বর সেনকে।

ঘরে কেউ নেই, তবু কে বুঝি দেখে ফেলে, এই ভয়ে চিঠিটা মুঠোয় চেপে বসে রইলেন কিছুক্ষন। হাতের ঘামে ভিজে যাচ্ছে নরম কাগজটা। ...

আস্তে খুললেন। প্রথম লাইনে চোখ ফেললেন, আর দ্বিতীয়বার আর একটা ছোবল খেলেন।

এ লাইনটার মানে কী ? একেবারে প্রথম লাইনটার?

শ্রীচরণেষু বাপী ! মাকে চিঠি দিয়েছিলাম উত্তর পাইনি। খুব চেষ্টা করে আশা করছি, চিঠিটা বোধহয় - মারা গেছে। তাই আবার হ্যাংলার মতো তোমায় এই চিঠি। এটাও যদি মারা যায় তাহলে এই অভিশপ্ত জীবনের ওপর দাঁড়ি টেনে দেব। আরো আগেই সে দাঁড়ি টেনে দেবার কথা। কোনোমতে নরক থেকে পালিয়ে উদ্ধার হয়ে এসে আবার তার থাবায় পড়বার ভয়ঙ্কর ভয় নিয়েও কি বসে থাকে কেউ? তবু নির্লজ্জের মত

বসে আছি ভয়ে কাঁটা হয়েও। বাপী গো, পৃথিবী ছেড়ে চলে যাবার আগে তোমাদের একবার বড্ডো দেখতে ইচ্ছে করছে। হয়তো ইচ্ছেটা শুনে তোমরা ঘেন্নায় মুখ বাঁকাবে, হয়তো ভাববে কি দুঃসাহস! তবু না জানিয়ে পারছি। মরতেই তো যাচ্ছি আর ভয় লজ্জা কী? যদি পায়ের ধুলো নেবার ভাগ্য না হয়, তো এইটাই তোমাদেরকে আমার শেষ প্রণাম জানানো। চিঠির উত্তর আসতে কতদিন লাগে? সাতদিন? দশদিন? তার বেশি নিশ্চয় নয়। ইতি

তলায় নাম সই করেনি। কিন্তু সই করেনি বলে কি তনুর চিঠি বুঝতে ভুল হবে?

এখন কী করবেন সোমেশ্বর ? ছুটে বাড়ী চলে যাবেন? অমলার কাছে

আছড়ে পড়ে বলবেন, অমলা! তনুর চিঠি! অমলা তনু বেঁচে আছে। তনু এই হাতের গোড়ায় দুর্গাপুরে! ভাবতে পারো অমলা? এক্ষুনি চলো অমলা। নিয়ে আসি আমাদের তনুকে। দেরি করলে চরম সর্বনাশ হয়ে যাবে।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का बांग्ला में अनुवाद कीजिए : 10

(अ) हर दिन की तरह आज सुबह की सैर के लिए घर के दरवाज़े से पहला कदम बाहर निकालने से पहले ही इस आदमी ने सड़क के दाईं और बाईं तरफ का जायजा लिया। सड़क बिल्कुल खाली थी। इसे बहुत गहरा संतोष हुआ और इस संतोष का नतीजा उसके मुँह पर दिखा। एक हल्की-सी मुस्कान थी। चूँकि सड़क खाली थी और मन भी प्रफुल्लित था तो कुछ गुनगुनाना लाजमी था। ऐसे माहौल में इंसान कोई खुशी का गीत ही अकसर गुनगुनाता है। इस आदमी ने भी ऐसा ही किया। गाँव में सुबह खेत की तरफ जाते वक्त किसान

द्वारा गुनगुनाया जाने वाला एक लोकगीत इस वक्त उसकी जुबाँ पर था। अब यह तो आप समझ ही चुके होंगे कि यह आदमी कभी गाँव में रहता था और किसानी से भी नाता था। हालांकि इस सुबह जिसकी मैं बात कर रहा हूँ उस समय के इस आदमी के पहनावे से आप उसके अतीत के बारे में कोई भी अंदाजा नहीं लगा सकते हैं। हाफ पेंट और टी-शर्ट अब भी शायद उसके गाँव में सुबह के वक्त कोई खेत में पहनकर नहीं जाता होगा।

वह आदमी जो लोकगीत गुनगुना रहा था उसी से उसक अतीत का अंदाजा लगाया जा सकता है। उस गीत के बोलों में वह इतना डूब चुका था कि यह भूल गया कि वह सड़क के किनारे चल रहा है। खाली ही सही लेकिन जब सड़क थी तो वाहन कभी भी आ सकते थे। हालांकि आज कोई वाहन नहीं आया, वह खुद ही चलकर डिवाइडर से टकरा गया। टकराहट इतनी भर थी कि दाएँ पैर की ठोकर लगी थी और चप्पल पहनने के कारण अँगूठे का नाखून छिल गया था। उसे अपने आप पर गुस्सा आया। गुस्से की दो वजहें थीं। पहली वजह तो यह थी कि खाली सड़क हुई तो क्या

हुआ, इंसान को ध्यान से चलना चाहिए। दूसरी वजह यह थी कि उसे अचानक याद आया कि जब गाँव में खेत में जाते वक्त यह लोकगीत गाते हैं तो चप्पल पहनकर नहीं जाते। जूती पहनकर जाते हैं। ठोकरें तो वहाँ भी लगती हैं लेकिन अँगूठे नहीं छिलते।

(ब) धनिया इतनी व्यवहार–कुशल न थी। उसका विचार था कि हमने जमींदार के खेत जोते हैं, तो वह अपना लगान ही तो लेगा। उसकी खुशामद क्यों करें, उसके तलवे क्यों सहलाएँ। यद्यपि अपने विवाहित जीवन के इन बीस बरसों में उसे अच्छी तरह अनुभव हो गया था कि चाहे कितनी ही कतर–ब्योंत करो, कितना ही पेट–तन काटो, चाहे एक–एक कौड़ी को दाँत से पकड़ो; मगर लगान का बेबाक होना मुश्किल है। फिर भी वह हार न मानती थी, और इस विषय पर स्त्री–पुरुष में आए दिन संग्राम छिड़ा रहता था। उसकी छः संतानों में अब केवल तीन जिंदा हैं, एक लड़का गोबर कोई सोलह साल का, और दो लड़कियाँ सोना और रूपा, बारह और आठ साल की। तीन लड़के बचपन ही में मर गए। उसका मन आज भी कहता

था, अगर उनकी दवा-दवाई होती तो वे बच जाते; पर वह एक धले की दवा भी न मँगवा सकी थी। उसकी ही उम्र अभी क्या थी। छत्तीसवाँ ही साल तो था; पर सारे बाल पक गए थे, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं। सारी देह ढल गई थी, वह सुंदर गेहुँआँ रंग सँवला गया था, और आँखों से भी कम सूझने लगा था। पेट की चिंता ही के कारण तो। कभी तो जीवन का सुख न मिला। इस चिरस्थायी जीर्णावस्था ने उसके आत्मसम्मान को उदासीनता का रूप दे दिया था। जिस गृहस्थी में पेट की रोटियाँ भी न मिलें, उसके लिए इतनी खुशामद क्यों ? इस परिस्थिति से उसका मन बराबर विद्रोह किया करता था, और दो-चार घुड़कियाँ खा लेने पर ही उसे यथार्थ का ज्ञान होता था।